International Journal of Enhanced Research in Educational Development (IJERED)
ISSN: 2320-8708, Vol. 12 Issue 4, July.-August, 2024, Impact Factor: 8.376

"माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में समस्या समाधान और उपलब्धि में सहसंबंधों का अध्ययन"

डॉ. भारती भार्मा[1], पूजा जाट[2]

[1]असिस्टेंट प्रोफेसर, बियानी गर्ल्स बी.एड. कॉलेज, जयपुर
[2]बी.एड.एम.एड. छात्रा, बियानी गर्ल्स बी.एड. कॉलेज, जयपुर

सार

इस पेपर में माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के समस्या समाधान और उपलब्धि में सहसंबंधों का अध्ययन किया गया है।इस अध्ययन में विद्यार्थियों को स्वयं करके सीखने की क्षमता विकसित होती है। शिक्षकों द्वारा विद्यार्थियों की समस्या समाधान करके उनके सर्वांगीण विकास किया जाता है। विद्यार्थियों में समस्या समाधान और उपलब्धि में सहसंबंधों का मापन हेतु सरकारी व गैर सरकारी विद्यालय के 250विधार्थियो को आधार बनाया गया है। प्रदतो के विश्लेषण हेतु अध्ययन मानक विचलन, क्रोतिक अनुपात तथा सहसंबंध सांख्यिकी प्रविधियिों को प्रयुक्त किया गया। विश्लेषण करने के उपरांत पाया गया कि माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में समस्या समाधान और उपलब्धि में कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।

कीवर्डः–शैक्षिक उपलब्धि, समस्या समाधान

प्रस्तावना

शिक्षा प्रदान करना विद्यालय का एकमात्र उद्देश्य होता है। विद्यालयों में शिक्षा द्वारा ही शिक्षित करने पर पूरा ध्यान दिया जाता है। आज किसी भी विद्यार्थी की शैक्षिक उपलब्धि के आधार पर ही उसकी योग्यता का निर्धारण किया जाता है। जैसे अच्छे अंक से उत्तीर्ण होने वाले विद्यार्थी को हर क्षेत्र में योग्य समझकर सम्मानपूर्वक व्यवहार किया जाता है। इसी आकांक्षा के चलते वि द्यार्थी मानसिक तनाव से ग्रस्त हो जाता है। शिक्षा में तीन स्तर होते हैं जिसमें माध्यमिक स्तर बहुत महत्वपूर्ण है। इस समय विद्यार्थी का शारीरिक वृद्धि विमानसिक विकास बहुत अधिक होता है। जहां पर शिक्षा प्राप्त करता है उस समय उसको बहुत सारी बातें प्रभावित करती हैं जैसे कि विद्यालय का वातावरण और उनकी शैक्षिक उपलब्धि ।

विद्यार्थियों को शिक्षण काल में अनेक समस्याओं और कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है जिनका समाधान उसे स्वयं करना पड़ता है। समस्या विद्यार्थी के पाठ्यवस्तु से संबंधित होती है। इसमें छात्र को करके सीखने के अवसर उपलब्ध होते हैं। विश्व में अध्यापक उनकी सहायता करते हैं।

शैक्षिक उपलब्धि का तात्पर्य शिक्षा के क्षेत्र में प्राप्त परिणामों से होता है। शैक्षिक उपलब्धि विद्यार्थियों द्वारा दी जाने वाली कक्षा कक्ष की वे क्रियाएं होती है जो पूरे सत्र में अधिगम की प्राप्ति के लिए की जाती है। अतः शैक्षिक उपलब्धि से आशय शिक्षण के क्षेत्र में परिणाम से होता है। विद्यार्थी के सर्वांगीण विकास को उसके आस–पास का वातावरण प्रभावित करता है। इसी प्रकार विद्यार्थी की शिक्षा उपलब्धि को उसके विद्यालय का वातावरण प्रभावित करता है। यदि विद्यालय का वातावरण अच्छा है तो विद्यार्थी को शिक्षा प्राप्त करने में रुचि उत्पन्न होती है।

शिक्षा उपलब्धि का सम्बन्ध शिक्षक व्यवहार परिवार का वातावरण विद्यार्थी की मानसिक व शारीरिक स्थिति, विद्यार्थी के सहपाठियों के साथ–साथ विद्यालय का वातावरण शॉपिंग मॉल आदि स्थित हो तो विद्यार्थी को शिक्षा ग्रहण करने में परेशानी का सामना करना पडता है। विद्यालय के बाहरी वातावरण के साथ–साथ विद्यालय के शिक्षकों का व्यवहार, कक्षा–कक्ष स्थित, पानी–बिजली की व्यवस्था, बैठने की व्यवस्था खेल का मैदान, लाइब्रेरी में पुस्तकों की व्यवस्था आदि आन्तरिक व्यवस्था का का भी उचित प्रबन्धन होना चाहिए तभी बालक का शिक्षा उपलब्धि स्तर उच्च हो सकता है। विद्यार्थी के जीवन को सुव्यवस्थित करने की नींव विद्यालय से ही प्रारम्भ होती है।

अतः विद्यालय वातावरण विद्यार्थी में समस्त उपलब्धियों के लिए आवश्यक है। अगर विद्यालय का वातावरण अच्छा है तो विद्यालय से सन्तुष्ट होगा और अगर वह सन्तुष्ट होता है तो उसकी शैक्षिक उपलब्धि भी प्रभावित हो सकती है और ऐसा भी हो सकता है कि विद्यालय का वातावरण भी अच्छा हो और वह विद्यालय से सन्तुष्ट हो लेकिन उसके उपरान्त भी उसकी शैक्षिक उपलब्धि कम या ज्यादा हो सकती है।

उद्देश्य:-

1- माध्यमिक स्तर के सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों में समस्या समाधान और उपलब्धि में सहसम्बंध का तुलनात्मक अध्ययन करना।

2- माध्यमिक स्तर के गैर सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों में समस्या समाधान और उपलब्धि में सहसम्बंध का तुलनात्मक अध्ययन करना।

परिकल्पनाः–

1- माध्यमिक स्तर के सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों में समस्या समाधान और उपलब्धि में सहसम्बंध में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

2- माध्यमिक स्तर के गैरसरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों में समस्या समाधान और उपलब्धि में सहसम्बंध में कोई सार्थक अन्तर नहीं है

समस्या का औचित्यः–
प्रतीक कार्य को करने का कोई उद्देश्य या कारण अवश्य होता है क्योंकि कारण व कार्य एक दूसरे के पुरक होते है।

शिक्षको की दृष्टि से छात्रो की समस्या समाधान शैक्षिक उपलब्धि के बीच संबंध पाया जाना आवश्यक है। शिक्षक शिक्षार्थियों के मार्गदर्शक के रूप में कार्य करता है। शिक्षक के सानिध्य में रहकर ही शिक्षार्थी स्वयं भी अपनी कठिनाईयों की जानकर उनके समाधान हेतु प्रयासरत हो जाता है।

अनुसंधान कर्ता का कार्य होता है अनुसंधान करना। अनुसंधानकर्ता की शोध विषय का चयन करते समय यह ध्यान रखना चाहिए कि सम्बन्धित विषय पर पूर्व में कितना और कैसा कार्य हो चुका है। प्रस्तुत शोध विषय के आधार पर अनुसंधानकर्ता की छात्रों की समस्या को पहचानना और उनकी उपलब्धियो की जानने का प्रयास किया जाना चाहिए।

कार्य प्रणालीः–
स्तुत शोध में माध्यमिक स्तर के सरकारी व गैर सरकारी विधालय के छात्रों में समस्या समाधान और उपलब्धि में सहसम्बध का शिक्षण अध्ययन किया गया है। माध्यमिक स्तर के सरकारी व गैर सरकारी विद्यालयों के 250 विद्यार्थियों को शामिल किया गया है। किसी भी शोध कार्य के लिए न्यादर्श का चुनाव आवश्यक होता है। वर्तमान में समस्याओं का क्षेत्र इतना व्यापक हो गया है कि प्रत्येक व्यक्ति से सम्पर्क करना संभव नही है। न्यादर्श चयन की विधि को अपना कर शोधकर्ता अपने समय,शक्ति एवं धन की बचत कर सकता है। साथ ही इसमें हमे सम्पुर्ण समुह का अध्ययन न कर उसके छोटे समुह का अध्ययन करना पडता है।

समस्या के अधिक आयामों का अध्ययन कर सकते है।प्रति चयन मे हमे छोटे समुह का ही अध्ययन करना होता है,हम आकडों के संकलन मे विशेषज्ञों की समग्रता आसानी से ले सकते है। फलस्वरुप हमारे परिणाम भी अधिक विश्वसनीय एव परिशुद्ध हो सकते है इस शोध कार्य के अन्तर्गत स्तरीकृत यादृच्छिक न्यादर्श विधि का प्रयोग किया गया है। यादृच्छिक न्यादर्श प्रक्रिया से जनसंख्या की प्रत्येक स्तर की इकाईयाँ क्रमांकित कर ली जाती है। प्रस्तुत शोध में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।इस विधि के माध्यम से मानव व्यवहार के विभिन्न पक्षो की जानकारी प्राप्त होती है।

इस विधि द्वारा घटनाओं की वास्तविक परिवेश मे अध्ययन किया जाता है।सर्वेक्षण विधि ऐसे अध्ययन के लिए प्रयुक्त की जाती है जिसका उद्धेश्य यह ज्ञात करना होता है कि वर्तमान काल में सामान्य अथवा प्रतिनिधि स्थिति व व्यवहार क्या है। प्रस्तुत शोध प्रयोजना के लिए शोधार्थी द्वारा समस्या समाधान एव शैक्षिक उपलब्धि से सम्बधित स्वनिर्मित प्रश्नावली का प्रयोग किया गया है।

इस शोध मे मानकिकृत अमानकिकृत उपकरणो का प्रयोग किया गया है। उपयुक्त घटको के निर्धारण के पश्चात घटकानुसार प्रश्नो का निर्माण किया गया जिसमें हिन्दी व्याकरण सम्बधि व्यवहारीक ज्ञान प्रश्नावली के प्रारम्भ मे समुचित निर्देश लिखे गए प्रश्नो की भाषा सरल एव स्पष्ट रखी गई।

एक प्रशन मे एक विचार प्रस्तुत किया गया कुछ प्रश्न सकारात्मक व कुछ प्रश्न नकारात्मक रखें गये। विधार्थियो मे सार्थक अंतर निकालने के लिए T– परीक्षण किया गया है। अनुसंधान में तथ्यों का विश्लेषण महत्वपूर्ण है। तथ्यों का विश्लेषण किये बिना उसका वास्तविक प्रयोग अनुसंधान कार्य में नहीं हो सकता है। विश्लेषण के अन्तर्गत मूल्य आंकड़ों के प्रतिशत, मध्य, पारस्परिक सहसंबंधो को सूचकांकों में परिवर्तित करके प्रस्तुत किया जाता है।

विद्यालयों के सरकारी व गैर सरकारी विद्यार्थियों की समस्या समाधान और उपलब्धि में सहसंबंधों के अध्ययन को प्रदर्शित किया गया है।

प्रदतों का विश्लेषण एवं व्याख्या :–

परिकल्पना संख्या 1– माध्यमिक स्तर के सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों में समस्या समाधान और उपलब्धि मेंसहसम्बन्ध का तुलनात्मक अध्ययन करना

सारणी सख्या 1

चर समस्या समाधान उपलब्धि	समुह	N	R	t- मान
	छात्र	125	0.14	1.15
	छात्रायें	125	0.10	1.22

ग्राफसंख्या

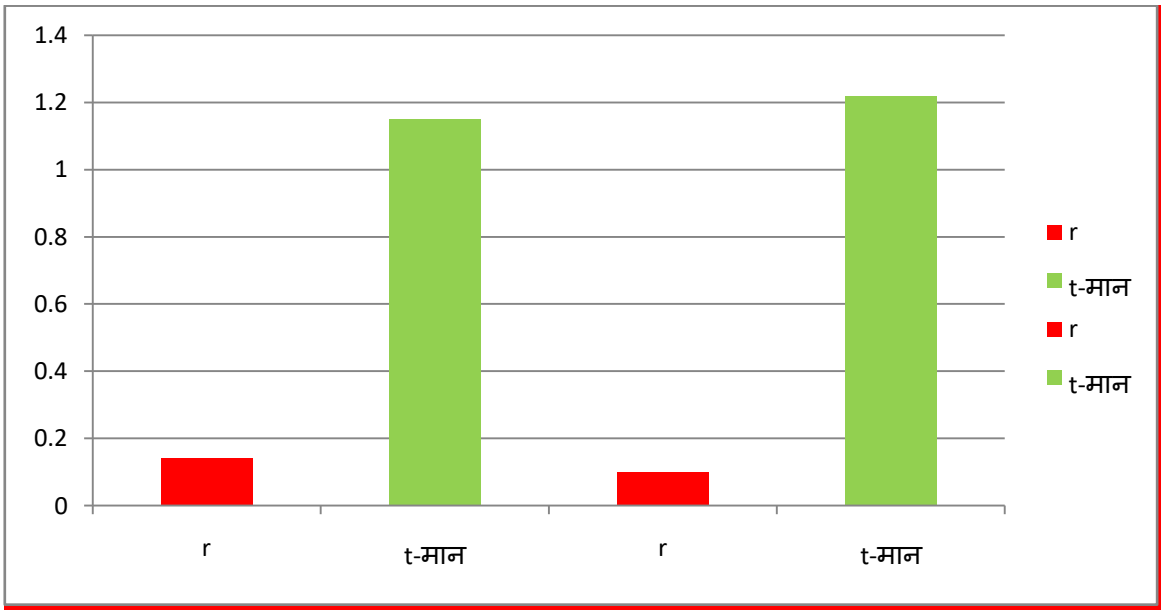

Df= N1+N2 – 2 =98

सार्थकता स्तर का मान 0.05 पर ज का मान 1.98
सार्थकता स्तर 0.01 पर ज का मान 2.98

उपरोक्त तालिका संख्या 4.6 में माध्यमिक स्तर के सरकारी विद्यालय के विद्यार्थीयों में समस्या समाधान और उपलब्धि के सहसंबंधों को प्रदर्शित किया गया है। माध्यमिक स्तर के सरकारी विद्यालय के विद्यार्थीयों में समस्या समाधान और उपलब्धि के मध्य सह–सम्बन्ध गुणांक का मान क्रमशः 0.14 व 0.10 प्राप्त हुआ है जो कि समस्या समाधान और उपलब्धि के मध्य निम्नस्तरीय सह–सम्बन्ध को प्रदर्शित करता है।

परिकल्पना संख्या 2 –माध्यमिक स्तर के गैरसरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों में समस्या समाधान और उपलब्धि में सहसम्बन्ध का तुलनात्मक अध्ययन करना।

सारणी सख्या 2

चर समस्या समाधान उपलब्धि	समुह	N	R	t.– मान
	छात्र	125	0.19	1.16
	छात्रायें	125	0.23	1.28

ग्राफ संख्या 2

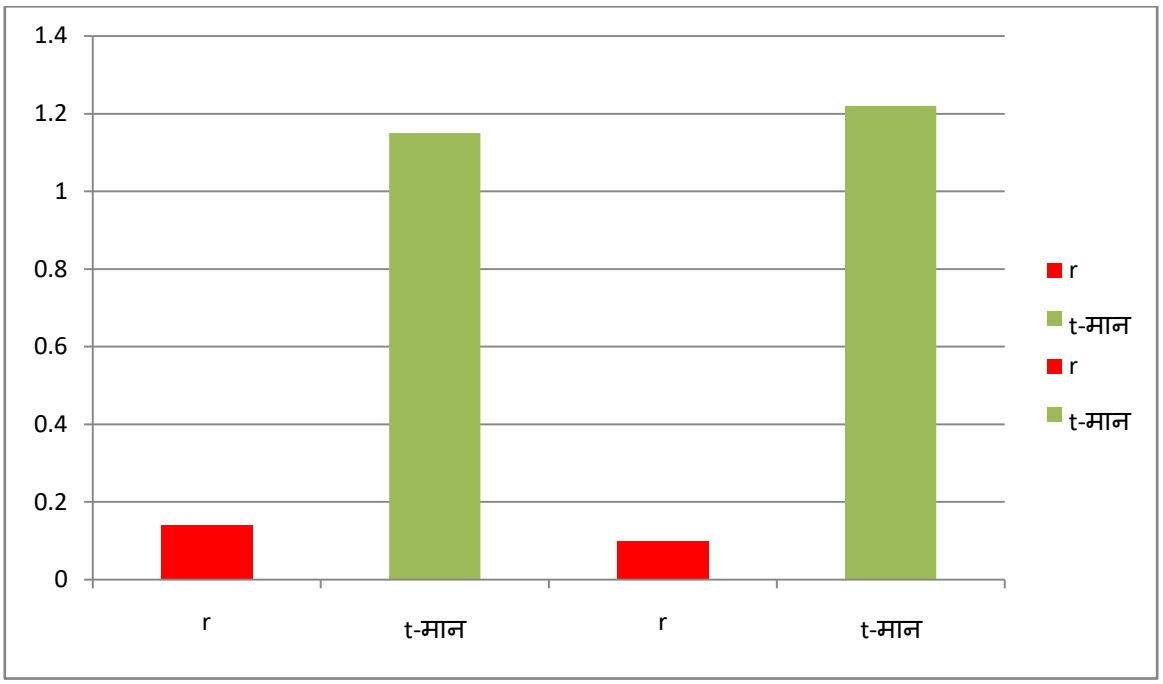

Df = N1 + N2 -2 =98

सार्थकता स्तर का मान 0.05 पर ज का मान 1.98
सार्थकता स्तर 0.01 पर T का मान 2.98.

उपरोक्त तालिका संख्या 4.9 में माध्यमिक स्तर के गैरसरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों में समस्या समाधान और उपलब्धि के सहसंबंधों को प्रदर्शित किया गया है।

माध्यमिक स्तर के गैरसरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों में समस्या समाधान और उपलब्धि के मध्य सह–सम्बन्ध गुणांक का मान क्रमशः 0.19 व 0.23 प्राप्त हुआ है जो कि समस्या समाधान और उपलब्धि के मध्य निम्नस्तरीय सह–सम्बन्ध को प्रदर्शित करता है।

निष्कर्ष

उपरोक्त सारणी में दोनों समूह के मध्य ज का मान क्रमशः 0.15 व 1.22 प्राप्त हुआ है। यह मान df 48 के लिये सार्थक स्तर 0. 05 के सारणीय मान 1.98 तथा 0.01 के सारणीय मान 2.58 से कम है। निष्कर्षतः माध्यमिक स्तर के सरकारी विद्यालय के विद्यार्थीयों में समस्या समाधान और उपलब्धि के सहसंबंधों के प्रभाव पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है। शून्य परिकल्पना ''माध्यमिक स्तर के सरकारी विद्यालय के विद्यार्थीयों में समस्या समाधान और उपलब्धि में सहसम्बन्ध में कोई सार्थक अन्तर नहीं है'' स्वीकृत की जाती है।

उपरोक्त सारणी में दोनों समूह के मध्य ज का मान क्रमशः 1.16 व 1.28 प्राप्त हुआ है। यह मान df 48 के लिये सार्थक स्तर 0. 05 के सारणीय मान 1.98 तथा 0.01 के सारणीय मान 2.58 से कम है। निष्कर्षतः माध्यमिक स्तर के गैरसरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों में समस्या समाधान और उपलब्धि के सहसंबंधों के प्रभाव पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।

शून्य परिकल्पना ''माध्यमिक स्तर के गैरसरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों में समस्या समाधान और उपलब्धि में सहसम्बन्ध में कोई सार्थक अन्तर नहीं है'' स्वीकृत की जाती है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

[1]. बघेला, हेतसिंह (2006). शिक्षा के मनो सामाजिक आधार, जयपुर राजस्थान प्रकाशन ।
[2]. डॉ. उपेन्द्रनाथ दीक्षित, डॉ. हेतसिंह बघेला राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी जयपुर, इतिहास शिक्षण 120–14।
[3]. .डॉ. अशोक सिडाना एवं डॉ. पी. एन. (2006). सामाजिक अध्ययन शिक्षण, पेज नं. 276–312
[4]. डॉ. आविदा परवीन, डॉ. संध्या अग्रवाल (2006) सामाजिक अध्ययन शिक्षण आस्था प्रकाशन पेज नं. 283–290।

[5]. डोल एडगर : आडियो विजुअल मैथड्स इन टीचिंग (ड्राइगन प्रेस) न्यूयार्क।
[6]. डॉ. जानसन : टीचिंग आफ हिस्ट्री, संस्करण पृष्ठ सं. 163
[7]. डॉ. हेनरी जान्सिन : टीचिंग ऑफ हिस्ट्री मैकनिकल क. न्यूयॉर्क (1963) पृ. सं. 163,
[8]. घाटे, वी. डी.दी टीचिंग ऑफ हिस्ट्री आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी 1964 पृष्ठ सं. 139–40
[9]. जार्विस : दी टिचिंग ऑफ हिस्ट्री संस्करण पृष्ठ संख्या 208
[10]. केम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस : दी टिचिंग ऑफ हिस्ट्री (1965). पृष्ठ संख्या 137–153 ।

शोध से सम्बन्धित वेब साइट

[1]. www.eric.ed.gov.
[2]. www.google.com